मार्च–अप्रैल 2021

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 खेलना जरूरी है

उड़ान

6 काऊँ–काऊँ / मेरा स्कूल

7 प्यारी नदियाँ

8 दो पक्षी

9 मदद

10 सपने में मोर

11 पहले क्यों नहीं भेजा

12 विचित्र पक्षी

14 जादुई मटका

ज्ञान विज्ञान

15 पोषण

जोड़–तोड़

16 वैदिक गुणा

कलाकारी

17 कैसे करूँ

बात लै चीत ले

18 मेरी प्यारी स्कूल

21 माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

रिंकु,
उम्र–13 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **राज**, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा
वर्ष 12 अंक 129–130

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

धनवंती सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–संगम

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

खेलना जरूरी है

आप सब यह तो जानते ही होंगे कि खेलना कितना आवश्यक है। अगर आप नहीं खेलोगे तो आपके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? आज मैं आपको बताती हूँ कि खेलना कितना जरूरी होता है। खेलना किसको पसंद नहीं है?

जो छोटे–छोटे बच्चे होते हैं वो तो हर दम खेल में मग्न ही रहते हैं। भले ही उनको खेल के लाभ पता नहीं हो, लेकिन फिर भी वो खेलते ही रहते हैं। कुछ बड़े बच्चे ऐसे होते हैं, कि भले ही उनको खेल के लाभ पता हो तब भी उनको खेलना पसंद नहीं, क्यों?

अंजु मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

मुझे तो खेलना बहुत अच्छा लगता है। जब हम सुबह–सुबह उठते हैं तो सबको आलस आता है। लेकिन जब सुबह–सुबह उठकर आप दौड़ लगाओगे और कुछ खेलना शुरू करोगे तब देखोगे कि आपका मन सारे दिन कितना प्रसन्न रहता है। खेलने के बाद जब नाश्ता करोगे तो भूख भी अच्छी लगेगी और खाने में भी स्वाद आयेगा। इससे शरीर व हड्डियाँ तो मजबूत होंगी ही साथ में जब आप दूसरे काम करने बैठोगे तो मेरा दावा है अगर आपको थोड़ा सा भी आलस आ जाये।

हमारे लिए जितना जरूरी खाना, पीना है उतना ही जरूरी खेल भी है। हम खेल–खेल में बहुत कुछ सीख जाते हैं और कभी–कभी तो खेलते–खेलते हम इतने आगे बढ़ जाते हैं कि एक दिन दुनिया याद करती है।

मेरी ही बात बताती हूँ। मैं एक छोटे से गाँव में रहती हूँ। वहां मैं एक छोटे से स्कूल में पढ़ती हूँ। कुछ लोगों के लिए यह स्कूल साधारण है। पर मेरे लिए ऐसा बिल्कुल नहीं है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी इस गाँव से निकल कर दूर भी जा सकती हूँ। लेकिन जब मैंने स्कूल की मदद से खेलना शुरू किया तो खेल के कारण पहली बार मैं इस गाँव से बाहर निकली। वह भी घर वालों के बिना अपने कुछ साथी खिलाड़ी और शिक्षक के साथ।

मैने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन मैं अपने गॉव से बहुत दूर आकर अपना खेल दिखाऊंगी। इसलिए खेलना बहुत जरूरी है। हमारे शरीर के लिए भी और हमारे लिए भी। क्या पता ये खेल हमें कब ऊँचा उठा दे।

आरती बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

काऊँ–काऊँ

कौआ आया कौआ आया।
पंजें में अपने खाना लाया।
बिल्ली का भी मन ललचाया।
मुँह में उसके पानी आया।
कौए को मैं कदे(कभी) न खाऊँ।
छोटे–छोटे हैं मेरे पाँव।
बिल्ली कैसे उसे मनाए।
कौआ भी अब दिमाग चलाए।
कौआ बोला काऊँ–काऊँ।
बिल्ली मौसी मैं नीचे कदे न आऊ।

दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष, कक्षा–8,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

मेरा स्कूल

पढ़ने की तुम, ना करना भूल।
देखो यह है मेरा स्कूल।
बुरा तो बिल्कुल भी नहीं है ये।
इसीलिए इसमें पढ़ती मैं।
यहाँ के टीचर इतने प्यारे।
दया–प्रेम के भूखे सारे।
यहाँ के बच्चे भोले –भाले।
टीचर भी अच्छे दिलवाले।
पढ़ाई की मस्ती में चूर।
इस स्कूल की आन अलग है।
इस स्कूल की शान अलग है।
पढ़ने के यहाँ तरीके निराले।
अंधेरे में भी पाये उजाले।
इसमें पढ़कर नाम कमा लूँ।
थोड़ा इसकी शान बढ़ा दूँ।
इसमें पढ़ने का हमें गुरूर।
क्या हुआ जो थोड़ा है दूर।

सामूहिक–फरिया स्कूल के बच्चे

चंद्रमुखी सैनी,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सितारा

प्यारी नदियाँ

एक था जंगल दो थी नदियाँ।
नदियों में था पानी गहरा।
जंगल बोला सुन ओ नदियाँ।
तेरा पानी मीठा ताजा।
नदियाँ बोली सुन ओ राजा।
तेरे अंदर तेरा राजा।
एक दिन अपना बजेगा बाजा।
एक दिन फिर ऐसा आया।
जंगल पर अकाल था छाया।
नदियों का पानी भी सूखा।
जंगल का राजा भी भूखा।
हिरण भैंसों को खा जाए।
खाकर अपनी भूख मिटाए।
जंगल था वीरान पड़ा।
फिर भी खामोश खडा।
नदियाँ बोली सुन रे जंगल।
चारों तरफ हुआ अमंगल।
कुछ तो कर तू मेरे भाई।
मेरी मछली मरती जाए।
सुने ना कोई पुकार हमारी।
एक रात फिर ऐसी आई।
जंगल पर थी बदली छाई।
ये नई मुसीबत कैसी आई।
नदिया भी डर के घबराई।
अब क्या होगा जंगल भाई।
आसमान में बिजली छाई।
गड़–गड़ की आवाजें आई।
तेजी से फिर बारिश आई।
नदी में पानी चढ़ता जाए।
मछली भागे दौड़ लगाए।
जंगल पर हरियाली छाई।
मीठे स्वर में कोयल गाई।
आओ मेरे बादल भाई।

उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया के बच्चे

अंकिता मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–हरियाली

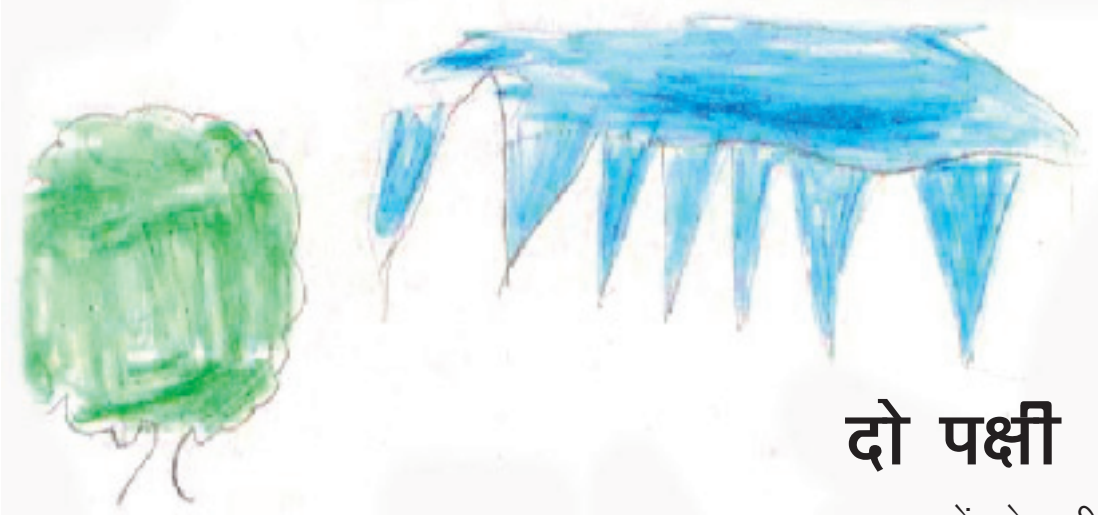

दो पक्षी

आसमान में दो पक्षी
लाल गुलाबी दो पक्षी
ऊपर नीचे दो पक्षी
काले नीले दो पक्षी
खाते पीते दो पक्षी
ट्रेन से जाते दो पक्षी
घर पहुँचे दो पक्षी
पेट फुलाते दो पक्षी
खेत हाँकते दो पक्षी
गेहूँ खाये दो पक्षी
पेट भरते दो पक्षी
आसमान में दो पक्षी

अमर मीना, उम्र–12 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

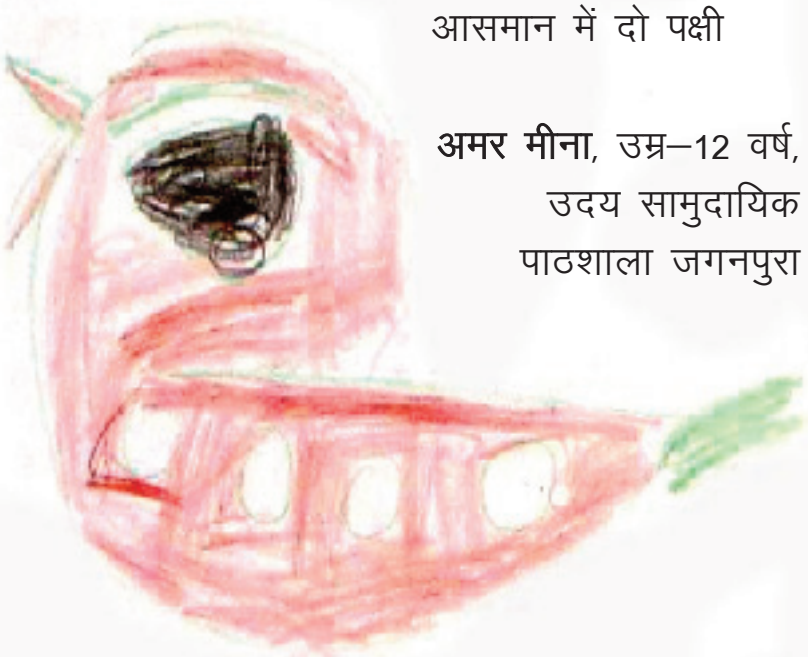

अजय बैरवा, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

मदद

चंद्रमुखी सैनी,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–सितारा

एक गाँव में प्रिया नाम की एक लड़की रहती थी। वह बहुत मेहनती थी। एक दिन वह खेत पर काम करने के लिए गई। वहाँ उसे एक परेशान आदमी दिखाई दिया। वह उसके पास गई और बोली, ''अंकल आपको क्या हुआ?'' वह बोला, ''मैं काम करते–करते थक गया हूँ।'' प्रिया बोली, ''मैं काम करती हूँ, आप आराम करो।'' वह आराम करने लगा और प्रिया काम करने लगी। काम करने के बाद वह उसके पास गई और बोली, ''मैंने तुम्हारा काम कर दिया है। अब मैं अपने घर जाती हूँ।'' वह अपने घर चल दी।

घर जाते–जाते उसे रास्ते में एक खरगोश दिखाई दिया। उसके पैर में कांटा लगा हुआ था। वह उसके पास गई। खरगोश बोला, ''क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो?'' वह बोली, ''हाँ, मैं तुम्हारी मदद करूंगी।'' खरगोश बोला मेरे पैर में कांटा चुभ गया है। उसे निकाल दो। उसने कांटा निकाल दिया। खरगोश बोला, ''तुमने मेरी मदद की। इसके लिए धन्यवाद।'' कहकर खरगोश अपनी गुफा में चल दिया और प्रिया भी अपने घर चली गई।

विकास बैरवा, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

सपने में मोर

एक दिन मुझे एक सपना आया। मैं मोर के ऊपर बैठा था और मोर हवा में उड़ रहा था। मुझे नीचे बहुत सुंदर नजारा दिखाई दे रहा था। कोई खेत में काम कर रहा था, तो कोई खेल रहा था, तो कोई कूद रहा था। मोर जोर–जोर से पीहू–पीहू कर रहा है। उसकी आवाज तेज होती जा रही है। तेज आवाजों से मेरी आँखें खुली तो मैने देखा, मैं कहीं नहीं उड़ रहा था। मैं तो खाट पर लेटा हुआ था।

मैने खाट से उठकर देखा कि एक मोर सामने आंगन में दाने चुगते हुए पीहू–पीहू कर रहा था। तभी मैंने सोचा क्यों न जो सपने में देखा वैसे ही किया जाए। बस मैं दौड़कर मोर के ऊपर चंढ़ने के लिए मोर के पीछे लपका। मोर मेरे आगे–आगे

कृष्णा बैरवा,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–हरियाली

दौड़ रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं मोर के साथ पकड़म–पकड़ाई खेल रहा था। मैंने मोर के ऊपर बैठने के लिए जोर की छलांग लगाई। मोर तो झट से उड़ गया और मैं नीचे गिर गया।

कुलदीप मीना, रा.उ.प्रा.वि. उलियाना

पहले क्यों नहीं भेजा

एक बार की बात है। एक जंगल था। उसमें एक आदमी अपने बच्चों और पत्नी के साथ रहता था। वह आदमी बहुत ज्यादा गरीब था। वह जंगल में जाता और लकड़ी काट कर उसके बच्चों को खाना खिलाता। एक दिन उसने सोचा, क्यों ना मैं अपने बच्चों को किसी स्कूल में पढ़ने के लिए भेज दूं। इनको वहाँ खाना भी मिल जायेगा और पढ़ाई भी हो जाएगी। आदमी यह बात अपनी पत्नी से कहता है। उसकी पत्नी बहुत ही अच्छी थी। उसने अपने पति की बात मान ली। उसने अपने बच्चों को रात में ही बता दिया, ''कल से तुम स्कूल जाओगे। इसलिए जल्दी ही उठ जाना।'' बच्चों ने पढ़ने की बात सुनी तो बहुत खुश हुए। अगले दिन बच्चे स्कूल जा रहे थे तो उनको बहुत अच्छा लग रहा था। क्योंकि उन बच्चों ने कभी सोचा भी नहीं था कि हम कभी स्कूल में पढ़ने भी जायेंगे। बच्चे बहुत अच्छी तरह से पढ़कर

काजल, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

घर आ गये। इतने में ही उनके घर पर गुरूजी पहुँच गये। बच्चों के माता–पिता ने उनको देखकर प्रणाम किया। गुरूजी के लिए बच्चों के पापा ने चारपाई भी बिछाया। पर गुरूजी को बैठने का समय भी तो नहीं था। वे बच्चों की पढ़ाई को लेकर बहुत बढ़ाई कर रहे थे। उनके माता–पिता से गुरूजी ने कहा, आपके बच्चे तो पढ़ने में बहुत ही ज्यादा अच्छे हैं और यह समय पर स्कूल भी आते हैं। इनको आपने पहले क्यों नहीं पढ़ाया। अब तक तो ये बच्चे कक्षा पाँच में, तो कोई कक्षा 7 में और आपकी बड़ी लड़की तो बड़ी स्कूल में होती।

महेन्द्र नायक, समूह–हरियाली, उम्र–13 वर्ष

विचित्र पक्षी

एक बार की बात है। एक जंगल था। उस जंगल में सभी प्रकार के जानवर रहते थे। उन सभी जानवरों में से एक पक्षी अलग एवं विचित्र था। उसके शरीर तो एक ही था पर गर्दन दो थी। जिसके कारण जंगल के सभी जानवर उसका मजाक उड़ाते थे। जानवर के शरीर के दो हिस्से आपस में एक–दूसरे से झगड़ते रहते थे। दोनों गर्दन भोजन के लिए झगड़ती रहती थी। जब एक गर्दन को भोजन मिल जाता तो वह दूसरी को चिढ़ाती। जब दूसरी को मिल जाये तो वह पहली गर्दन को चिढ़ाती थी।

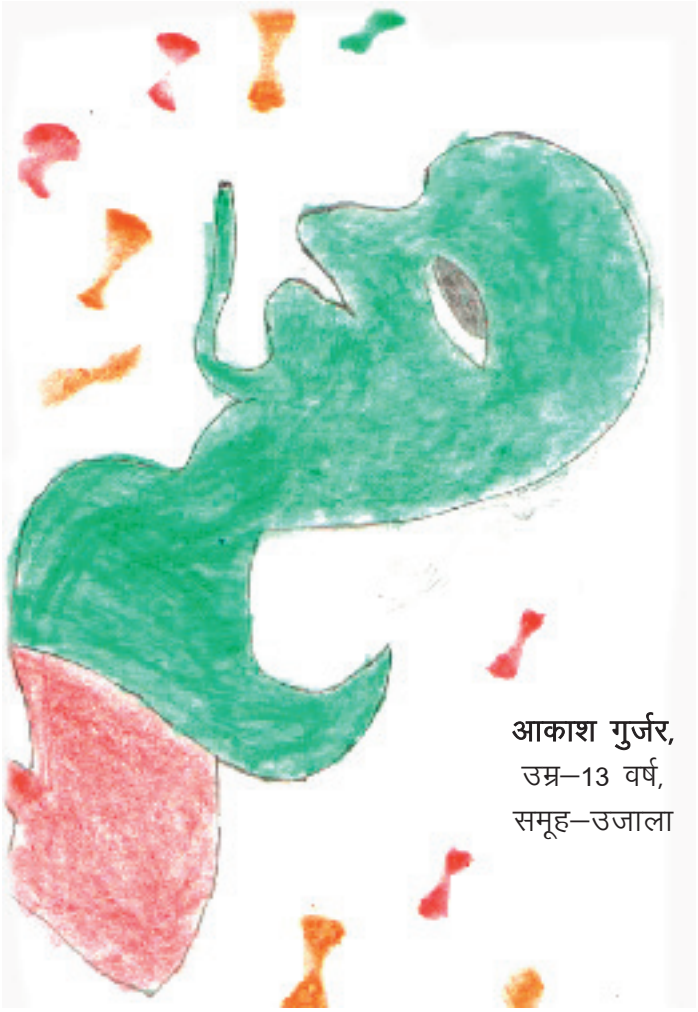

आकाश गुर्जर,
उम्र–13 वर्ष,
समूह–उजाला

एक दिन पहली गर्दन को बहुत मीठा फल मिला। जिसे वह दूसरी को चिढ़ा–चिढ़ा कर खा रही थी। दूसरी गर्दन ने भी कहा कि थोड़ा मुझे भी चखा दो। लेकिन उसने मना कर दिया और कहा, ''हमारे शरीर तो एक ही हैं। चाहे तू खा या मैं खाऊँ।''

दूसरी गर्दन ने कहा, ''इस फल का स्वाद मुझे भी लेना है।'' उसने कहा कि ये फल मुझे मिला है इसलिए इसे मैं ही खाऊँगी।

तभी दूसरी गर्दन का मित्र कौआ वहाँ आ गया। उसने अपने मित्र को सारी बात बताई और कहा कि मुझे इसको सबक सीखाना है। कौए ने कहा, ''थोड़ी दूर एक पेड़ है। उस पेड़ के फल बहुत कड़वे हैं। उस फल को खाने से इसके मुँह का स्वाद ही खराब हो जायेगा।

अगले दिन दूसरी गर्दन ने पहली से कहा, तुमने अभी तक कुछ क्यों नहीं खाया? तुम्हारे कुछ न खाने की वजह से मेरी नींद खुल गई। पहली ने कहा कि मेरी मर्जी। मैं कुछ खाऊँ या ना खाऊँ। फिर वह कहती है कि मेरे मित्र ने मुझे

बहुत अच्छे फल बताये हैं। मैं तो उन्हें खाने जा रही हूँ। तुम्हे खाना है तो चलो। फिर वे दौनों चले जाते हैं और उस पेड़ के पास पहुँच जाते हैं। उस पेड़ को देखकर दूसरी गर्दन तो समझ जाती है कि यह वहीं कड़वा पेड़ है। इसलिए वह नहीं खाती और पहली गर्दन खाने लग जाती है। खाते ही उसका मुँह कड़वा हो जाता है। अब पहली गर्दन जोर–जोर से चिल्लाती है कि मेरा मुँह कड़वा हो गया है। अब यहाँ से चलो कुछ मीठा खाने के लिए। पर दूसरी गर्दन जाने से मना कर देती है। कहती है कि तुमने भी कल मुझे मीठा फल नहीं खिलाया था। अब रहो कड़वे मुँह के साथ मैं कहीं नहीं जाने वाली।

धनवंती सैनी
उम्र–10 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

पहली गर्दन को अपनी गलती समझ में आ गई थी। उसने दूसरी गर्दन से माफी मांगी। अब वे हर चीज मिल बांट कर खाती।

कविता मीना, कक्षा–8, रा.उ.प्रा.वि. जमूलखेड़ा

प्रियंका मीना, उम्र–12 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

जादुई मटका

एक बार एक गाँव था। उस गाँव में एक राहुल नाम का आदमी रहता था। वह अपनी पत्नी के साथ खुश रहता था। उसे कोई दुःख नहीं था। वह अपने खेत में जाकर काम करता और खुश रहता।

एक दिन वह शाम को अपने घर आ रहा था। चलते–चलते वह रास्ते में पड़े एक पत्थर से टकरा कर गिर गया। उसने देखा उस पत्थर के पास एक मटका रखा हुआ है। पता नहीं उसे क्या सूझी। उसने उस पत्थर को उठाकर उस मटके के अंदर डाल दिया। जैसे ही पत्थर मटके में डाला उसने देखा कि थोड़ी ही देर में मटके के अंदर उस पत्थर जैसे सौ पत्थर हो गये। उसने सोचा यह मटता तो कोई जादुई मटका है। इसे मैं अपने घर ले जाता हूँ। उसने उस मटके में बहुत सारी चीजें डाली। तो वे सौ गुना हो गई। इस तरह वह बहुत अमीर हो गया।

राहुल के पास में रहने वाला एक व्यक्ति यह सब देखकर बहुत दुःखी हुआ और सोचने लगा, ''काश यह मटका मेरे पास होता।'' उसने उन पर नजर रखी और मौका मिलते ही वह मटका चुरा लिया। उसने गलती से उस मटके के अन्दर अपना हाथ दिया और उसके सौ हाथ हो गये। पर सारे हाथ मटके के अंदर ही फंस गए। अब हाथ बचाए तो मटका फूटे और मटका ना फोड़े तो हाथ नहीं निकले। राहुल ने यह सब देखा तो मटका फोड़ दिया। तो उस व्यक्ति का हाथ वापस बाहर निकल आया। मटके के साथ लालच का मटका भी फूट गया था। अब वह खुशी–खुशी रहने लगा।

नवरत्न प्रजापत, समूह–उजाला, उम्र–13 वर्ष

पोषण

आओ बच्चों करते हैं पोषण पर हम बात।
कोर्बोहाइड्रेट के स्रोत हैं अनाज, गन्ना, चुकंदर और आम।
हारे थके को उर्जा देना इनका है काम।
आओ बच्चों करते हैं .....
प्रोटीन भी देता उर्जा कोर्बोहाइड्रेट के समान।
पाओ प्रोटीन तो खाओ दाल, दूध, मक्खन और मांस।
आओ बच्चों करते हैं .....
तेल घी से वसा मिलती इसमें कुछ खास।
सबसे ज्यादा उर्जा मिलती भूख हो या उपवास।
आओ बच्चों करते हैं .....
बूझो जानो है क्या विटामिन, इसमें क्या खास।
बिटामिन फलों से मिलता नहीं तो होता रोगों का आघात।
आओ बच्चों करते हैं .....
नींबू, संतरा, अंगूर आंवला का अम्ल करता खट्टे दांत।
खट्टे फलों के सेवन से बढ़ती इम्यूनिटी पावर।
आओ बच्चों करते हैं .....

शिक्षक – लोकेश जांगिड़, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

शीतल बैरवा, उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली

जोड़–तोड़

वैदिक गुणा

पिंटु बैरवा,
कक्षा–4,
उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

मैंने पहले बहुत गणित पढ़ी थी। पर एक दिन गुरूजी ने हमें वैदिक गणित के गुणा दिये तो वे मेरे समझ में ही नहीं आये। क्योंकि वे पहले की तरह हल होने वाले गुणा नहीं थे। मैंने उन्हें फिर से करने की सोची। मैंने उन्हें हल किया और गुरूजी को दिखाया तो वे सभी गलत निकले। छुट्टी के बाद मैं घर आ गई और मेरे भाई विश्वास से कहा, ''मुझे वैदिक गुणा करना बता दे।'' मैंने एक गुणा लिया और उसे भाई से करवा लिया। मैं एक–एक गुणा लेकर हल करने लगी। मुझे इतना अच्छा लगा कि करते–करते शाम हो गई। फिर मैंने रोटी खाई और सो गई। सुबह तैयार होकर स्कूल में गई। आज मैं बहुत खुश थी। स्कूल में मैंने कार्डशीट को पढ़ा और समूह में जाकर बैठ गई। हमारे गुरूजी आये तो उन्होंने वही सवाल फिर दिया तो मैंने उसे सही कर लिया। मुझे वे सही लगे क्योंकि वे पहले वाले उन गुणाओं की तरह नहीं थे। उनमें तो बहुत सारी संख्या आती थी। वैदिक गुणा में तो सीधी संख्या आती थी। तो मैंने उसे कर लिया और मैं सीख गई कि वैदिक गुणा कैसे होते हैं।

प्रिया गुर्जर, समूह–झरना, उम्र–11 वर्ष

कलाकारी

कैसे करूँ

जगनपुरा विद्यालय पर मीनाक्षी नाम की एक लड़की है। वह लड़की रचनात्मक कार्य में बिल्कुल भी रूचि नहीं लेती थी। जब भी कला का कार्य होता वह लड़की कहती है कि अभी तक मोरंगे में मेरा एक भी लेख नहीं छपता है। मैं कला का कार्य

ज्योति कुम्हार, उम्र–10 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

क्यूं करूँ? मुझसे नहीं होता है। मैंने मीनाक्षी से कहा कि आप कोशिश तो करो। उसने कहा कि आप हमें करके दिखाओ। मैंने चॉक लिया और ब्लेक बोर्ड पर आड़ी–तिरछी लाईन बनाई और उसको बुलाकर कहा कि इन लाइनों से चित्र बनाओ। उसने कोशिश की और चित्र बन गया। वह बहुत खुश हुई। उसने कहा कि ऐसा तो मैं बना सकती हूँ। उसने उस तरह के दो–तीन चित्र बनाये। उन चित्रों में रग भी भरे। वे चित्र काफी सुंदर लगे। उसी तरह उसने कहा कि चित्र तो अब मैं बना सकती हूँ लेकिन कहानी, कविता, अनुभव नहीं लिखा जाता है। मैंने उससे पूछा कि आप मुझे ऐसी कोई बात बताओ जो आपके जीवन में घटित होई हो। उसने स्कूल से जाते समय की एक घटना बताई। उसको मैंने उससे लिखने के लिए कहा। उसने उस घटना को लिखा। फिर मैंने उसमें सुधार किया और दूबारा लिखने को कहा। उसने फिर लिखा और वह मोरंगे को भेजी। इस तरह उसकी दो–तीन रचना व चित्र आदि मोरंगे में छपे। अब वह बहुत खुश है।

मानसिंह सिर्रा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

बात लै चीत लै

मेरी प्यारी स्कूल

हमारे विद्यालय में जिस प्रकार शिक्षा दी जाती है उसके अनुसार इसे पौराणिक काल का गुरूकुल भी कहते हैं। हमारी स्कूल का नाम है 'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।' मेरी स्कूल में 3–4 गांव के बच्चे पढ़ने आते हैं। यह रणथम्भौर रोड़ के पास है।

अंकित मीना, उम्र–12 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

हमारी स्कूल सरकारी और प्राइवेट स्कूलों से थोड़ी भिन्न है जो व्यक्ति हमारी स्कूल के टाइम टेबिल के बारे में नहीं जानते वे लोग कहते हैं कि ''इस स्कूल में तो सिर्फ खेल खिलाये जाते हैं, बच्चों को पढ़ाया नहीं जाता।'' हमारी स्कूल में योजना के अनुसार कार्य होता है। शिक्षक की अपनी योजना होती है। यहाँ सभी शिक्षक योजना के अनुसार कार्य करवाते हैं। हर समूह में प्रतिदिन 30 मिनट का समय खेलने के लिए होता है। जब एक समूह का समय पूरा हो जाता है तो दूसरा समूह का शुरू हो जाता है। इस तरह स्कूल का ग्राउण्ड सारे दिन चलता ही रहता है और अनजान व्यक्तियों को लगता है कि ये सारे दिन बच्चों को खिलाते रहते हैं।

हमारी स्कूल में बच्चों को आजादी है। जब भी कोई कार्य किया जाता है तो बच्चों को ध्यान में रखकर किया जाता है। जैसे विद्यालय आने–जाने के समय का निर्धारण, भोजन अवकाश करने के समय का निर्धारण, विद्यालय स्तर पर ऐच्छिक अवकाश करने का निर्धारण आदि। अधिकतर सर्दियों के मौसम में सर्दी घटती–बढ़ती

रहती है। तो इस दौरान बच्चों की सहमति से विद्यालय खुलने–बंद करने का समय परिवर्तन होता रहता है। जिस प्रस्ताव पर बच्चों का ज्यादा बहुमत होता है, उसे ही लागू किया जाता है।

हमारी स्कूल के बहुत से बच्चे स्टेट और नेशनल लेवल पर भी खेल चुके हैं। हमारी स्कूल में मुख्य रूप से खो–खो, हैण्डबॉल, कबड्डी, फुटबॉल आदि गेम खिलाये जाते हैं। हमारी स्कूल ने खेल में काफी प्रगति की है।

हमारी स्कूल में बच्चों की भावनाओं को देखकर उसको समझाया जाता है। जिस बच्चे को जिस कार्य में ज्यादा रूचि है। गुरूजी उस बच्चे को उस कार्य के बारे में बताते हैं। हमारी स्कूल में बच्चा स्वतंत्र होता है। उसे रूचि के अनुसार कार्य करवाया जाता है। हर चीज बारीकी से समझाई जाती है। कहानियों के माध्यम से समझाया जाता है। बच्चे पर किसी भी तरिके का दबाव नहीं होता है। हमारी स्कूल में शिक्षक, शिक्षिका द्वारा बच्चों के साथ बच्चों जैसा व्यवहार किया जाता है। उसे कोई भी चीज/कार्य करने से नहीं रोका जाता है। शिक्षक और बच्चे एक साथ बैठकर खाना खाते हैं। पढ़ाई में भी बच्चे और शिक्षक नीचे चटाई पर बैठकर ही पढ़ते हैं।

हमारी स्कूल में सुबह मनोरंजन करने के लिए बालसभा की जाती है। बालसभा में नृत्य, लोकगीत, बालगीत, कविता, राईम्स्, समाचार वाचन आदि चीजें होती है। यह पूरे सप्ताह चलती है। एक दिन दो समूह एक साथ बैठकर गाते हैं। बाकी बच्चे उनके द्वारा गाये गीत को दोहराते हैं। जब सभी समूहों का नम्बर आ जाता है तो दो दिन बचते है। उनमें एक दिन सभी समूहों का सामूहिक रूप से नम्बर रहता है और एक दिन शिक्षकों का नम्बर रहता है। जिसमें सभी शिक्षक और शिक्षिकायें अपनी मनपसंद का कार्य प्रस्तुत करते हैं। जैसे–नाटक, कहानी, कविता, आदि।

कक्षा 1 से 5 तक के हर बच्चे को सामूहिक रूप से 3–4 समूहों में पढ़ाया जाता है। हर समूह में 1–5 तक कक्षा स्तर के 15–20 बच्चे होते हैं। हमारे स्कूल में बच्चों को कक्षा की जगह समूहों में पढ़ाया जाता है। हमारे स्कूल में 6 समूह हैं। इन समूहों की जिम्मेदारी अलग–अलग शिक्षक की होती है। उच्च प्राथमिक स्तर में कक्षा 6 से 8 तक में अलग–अलग शिक्षक विषय के अनुसर पढ़ाते हैं।

हमारे स्कूल में कुछ अलग कार्य भी किये जाते हैं। जैसे – कारपेंट्री का काम, मिट्टी का काम आदि। इन कार्यों के लिए भी अलग–अलग शिक्षक हैं। अगर कोई बच्चा 5–10 दिन से ज्यादा की छुट्टी करता है तो शिक्षकों द्वारा उसके घर पर संपर्क किया जाता है। वैसे तो सभी शिक्षक सप्ताह में एक बार बच्चों के घर पर सम्पर्क करते हैं। जब बच्चा बड़ी कक्षा में जाता है तो उसे होमवर्क की जगह कल्पनाशील प्रश्न दिये जाते हैं। ये प्रश्न प्रकृति के सौन्दर्य से जुड़े होते हैं। उनके

साथ ऐसे प्रश्नों पर ज्यादा गौर किया जाता है, जो हमारे दैनिक जीवन में काम आते हैं। हर बच्चे को इतनी बारिकी से पाठ/प्रश्न/थीम/विषय वस्तु पर समझाया जाता है कि उसे प्रकृति, दैनिक जीवन से जुड़ाव हो ताकि वह कार्य उसको ज्यादा समय तक याद रहे। हर चीज की बाल की खाल निकाली जाती है। जैसे गाय और भैंस में अन्तर।

मेरे जीवन की एक बात है जब मैं छोटा था। हमारे घर के सामने एक प्राइवेट स्कूल थी। तो उसमें मेरा एडमीशन कराया गया। पता नहीं क्यों मुझे वहाँ पढ़ाई में कुछ भी इन्ट्रेस्ट नहीं आया। मैं बिना कारण स्कूल से भागकर घर आ जाता था। ऐसा थोड़े दिन चलने लगा। बाद में जब यह बात मेरे घर वालों को पता चली तो मेरी प्राइवेट स्कूल से टीसी ले ली गई।

हमारे गाँव से थोड़ी सी दूर एक सरकारी स्कूल थी। फिर उसमें मेरा एडमिशन कराया गया। वहाँ भी मेरे साथ यही हुआ। मुझे वहाँ पढ़ने में इन्ट्रेस्ट नहीं था। ना वहाँ खेलने की अनुमति थी। मैं वहाँ से बिना कारण ही बार–बार घर भाग आता था। ऐसा चलता रहा और थोड़े दिनों बाद मेरी वहाँ से भी टीसी ले ली गई। इसके बाद ग्रामीण शिक्षा केन्द्र उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा में मेरा एडमिशन कराया गया। न जाने क्यों जब मैंने उस स्कूल को देखा तो मेरे अन्दर आकर्षण जाग गया। जबसे मैं इसी स्कूल में पढ़ता हूँ। अब मैं आठवीं कक्षा में आ चुका हूँ। जैसे पहले में बिना कारण ही बार–बार स्कूल से भाग आता था। अब उसके विपरित हो गया। अब मैं पूरे समय विद्यालय में रूकता हूँ। क्योंकि यहाँ मेरी इच्छा अनुसार कार्य होता है। मेरी जो मर्जी करती है मैं वहीं करता हूँ यहाँ।

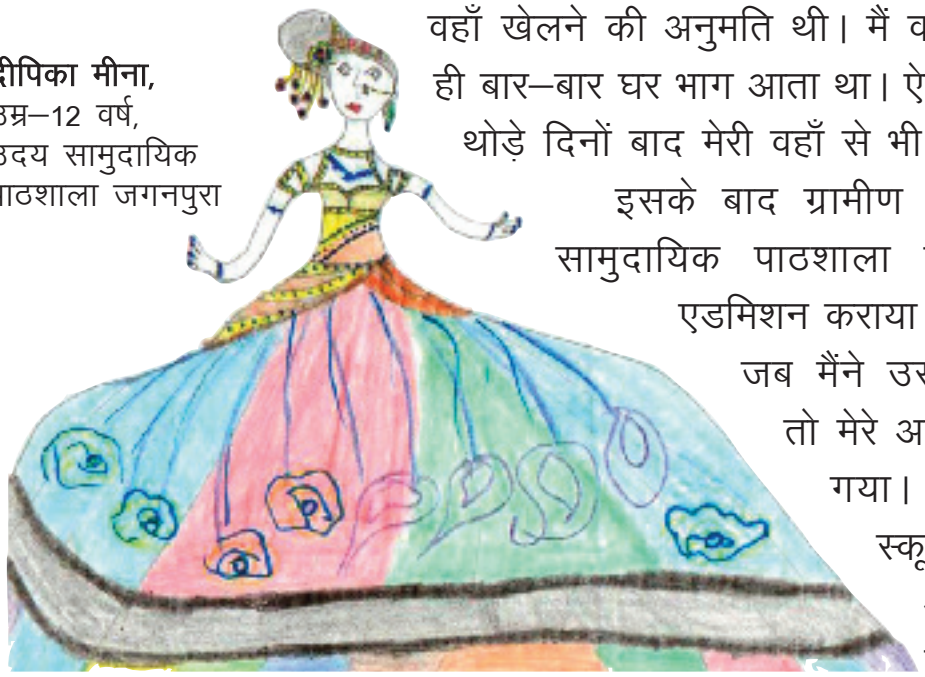

दीपिका मीना,
उम्र–12 वर्ष,
उदय सामुदायिक
पाठशाला जगनपुरा

हमारी स्कूल में सरपंच के चुनाव भी किये जाते हैं। चुवाव के माध्यम से हम स्कूल की जिम्मेदारियों में हिस्सा लेते है। जिसमें मैं दो बार रह चुका हूँ। यह मेरी प्यारी स्कूल है। चाहे यहाँ के बच्चे मुझे भूल जाए, स्कूल मुझे भूल जाये लेकिन मैं स्कूल को नहीं भूलूंगा।

रिंकू मीना, उम्र–13, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

माथापच्ची

सपना नायक,
कक्षा–4,
उदय सामुदायिक
पाठशाला फरिया

1. वह कौनसी चीज है जो अगर चलते–चलते थक जाए तो उसकी गर्दन काटने पर वह वापिस चलने लग जाती है।
2. वह कौनसी चीज है जो जितनी ज्यादा बढ़ती है उतनी ही कम होती जाती है।
3. एक व्यक्ति अपनी जिंदगी में सबसे ज्यादा बार क्या सुनता है।
4. छोटा सा रामदास, कपड़े पहने सौ–पचास।
5. ऐसी कौनसी चीज है जो हमेशा जीवन में गीली रहती है।
6. एक प्लेट में दो अण्डे, एक गर्म एक ठण्डा।

आरती, समूह–सितारा, उम्र–10 वर्ष, **सोना**, समूह–उजाला, उम्र– 11 वर्ष

हीहीही ठीठीठी

1. पप्पू :– पापा मुझे डी.जे खरीद कर दे दो।
पापा :– नहीं दूंगा, तू बहूत लोगों को तंग करेगा।
पप्पू :– नही करूंगा पापा, जब सब सौ जायेंगे तब बजाऊँगा।

2. दो चींटियां एक डिब्बे पर रेंग रही थी। अचानक एक चींटी डिब्बे को जोर–जोर से काटने लगी। दूसरी ने पूछा, ''ऐसा क्यों कर रही हो?''
पहली चींटी ने कहा, ''पढ़ा नहीं तुमने, डिब्बे पर लिखा है, ''यहां काटिए''।

श्रोत :– विष्णु गोपाल

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

सुनीता, उम्र–9 वर्ष, समूह–संगम

हुआ सवेरा मम्मी बोली
उठजा मेरी बेटी भोली....

उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

बलराम एक दिन खेत से काम करके वापस आ रहा था। तो उसने रास्ते में एक छोटी लड़की को रोते हुए देखा। लड़की के पास कोई नहीं था। बलराम उसके पास गया और उससे पूछा, ''तुम क्यों रो रही हो?'' उस लड़की ने कुछ नहीं बताया। .....

.

जितेन्द्र मीना, समूह–हरियाली, उम्र–12 वर्ष द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

मनीषा सैनी, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

पहेलियों के ज़वाब –

1. किसान
2. पोस्टमैन
3. लुहार
4. चोटी

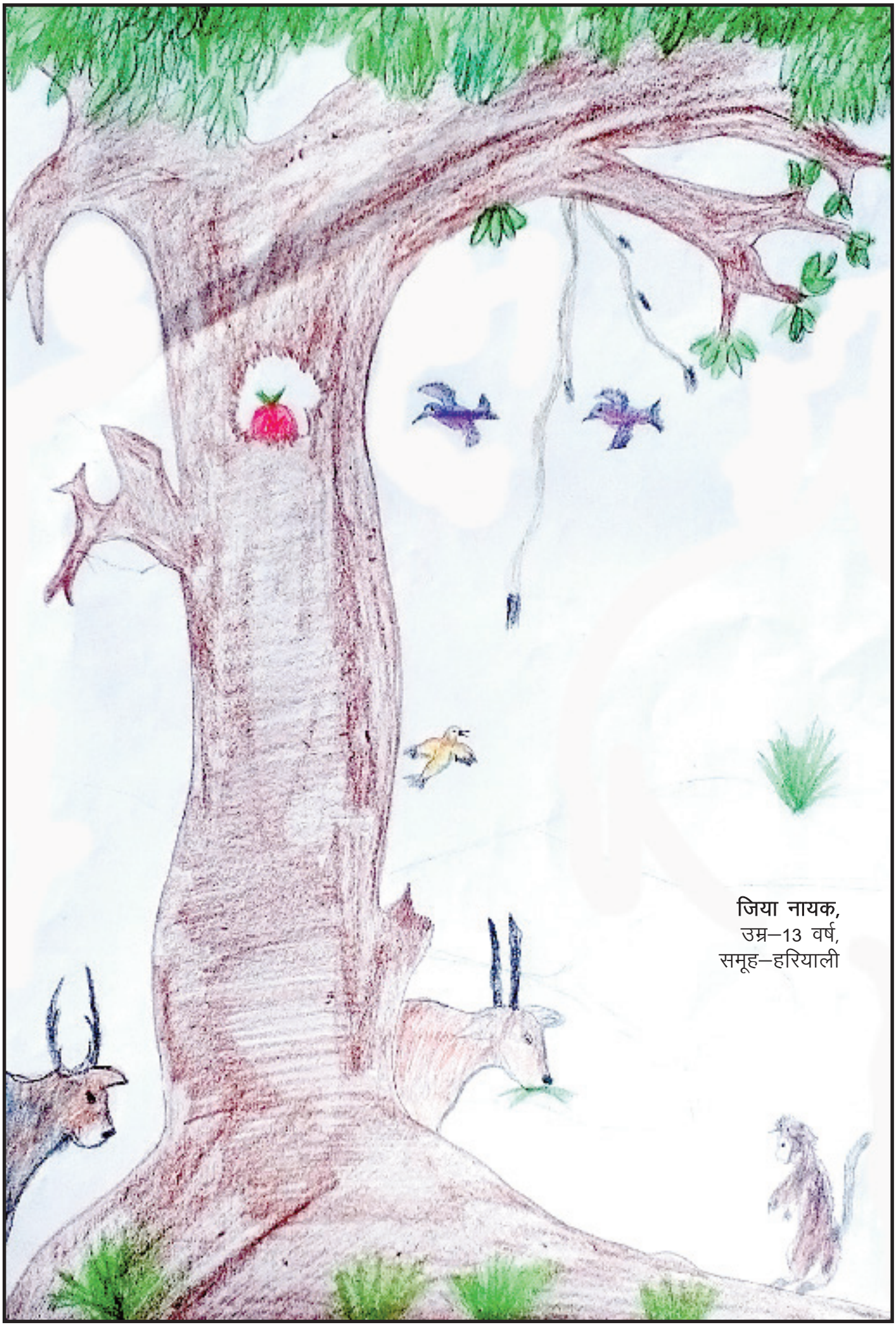

जिया नायक,
उम्र–13 वर्ष,
समूह–हरियाली